महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय अजमेर

विकास, विरासत और नवाचार : एक वर्ष का रिपोर्ट कार्ड

23 जुलाई से 22 जुलाई 2026

(Report Card 23 July 2025 to 22 July 2026)

शिक्षा
Excellence

नवाचार
Innovation

सहयोग
Collaboration

विकास
Growth

प्रस्तुत

माननीय कुलाधिपति महोदय

श्री हरि भाऊ बागडे जी

प्रस्तुतकर्ता

प्रो॰ सुरेश कुमार अग्रवाल

कुलगुरु

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

www.mdsuajmer.ac.in

प्रगति प्रतिवेदन

(Report Card)

(23 जुलाई 2025 से 22 जुलाई 2026)

श्री हरिभाऊ बागड़े जी

माननीय राज्यपाल, राजस्थान एवं कुलाधिपति
महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

कुलगुरु का निवेदन

माननीय कुलाधिपति महोदय,

सादर प्रणाम !

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर के कुलगुरु के रूप में विगत एक वर्ष (23 जुलाई 2025 से 22 जुलाई 2026) के दौरान विश्वविद्यालय में संपन्न विकासात्मक, शैक्षणिक, अनुसंधानपरक एवं प्रशासनिक कार्यों का यह प्रगति प्रतिवेदन आपके समक्ष विनम्रतापूर्वक प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष एवं संतोष का अनुभव हो रहा है।

यह वर्ष विश्वविद्यालय के इतिहास में केवल प्रशासनिक उपलब्धियों का वर्ष नहीं रहा, बल्कि परिवर्तन, नवाचार, सुशासन, भारतीय ज्ञान परम्परा तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रभावी क्रियान्वयन का वर्ष सिद्ध हुआ। इस अवधि में विश्वविद्यालय ने शिक्षा की गुणवत्ता, अनुसंधान की प्रासंगिकता, परीक्षा प्रणाली की पारदर्शिता, डिजिटल प्रशासन, विद्यार्थी कल्याण, वित्तीय अनुशासन, पर्यावरण संरक्षण तथा सामाजिक उत्तरदायित्व जैसे विविध क्षेत्रों में अनेक ऐतिहासिक पहल करते हुए स्वयं को एक परिवर्तनशील एवं उत्तरदायी विश्वविद्यालय के रूप में स्थापित करने का प्रयास किया।

विश्वविद्यालय परिवार का यह दृढ़ विश्वास है कि उच्च शिक्षा केवल डिग्री प्रदान करने का माध्यम नहीं है, बल्कि राष्ट्र निर्माण, चरित्र निर्माण, ज्ञान सृजन तथा समाज परिवर्तन का सशक्त साधन है। इसी दृष्टि से विश्वविद्यालय की प्रत्येक नीति, प्रत्येक कार्यक्रम एवं प्रत्येक निर्णय को राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की भावना तथा भारत की समृद्ध ज्ञान परम्परा के अनुरूप पुनर्संरचित करने का प्रयास किया गया।

इस अवधि में विश्वविद्यालय ने एक ओर आधुनिक तकनीक, डिजिटल गवर्नेंस, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, साइबर सुरक्षा तथा उद्योग आधारित पाठ्यक्रमों को अपनाया, वहीं दूसरी ओर भारतीय ज्ञान परम्परा, गुरुकुलीय वातावरण, कर्मयोग, पर्यावरण चेतना तथा सांस्कृतिक मूल्यों को भी विश्वविद्यालय की कार्यसंस्कृति का अभिन्न अंग बनाया। हमारा प्रयास रहा कि आधुनिकता और भारतीयता का संतुलित समन्वय स्थापित हो तथा विद्यार्थी ज्ञान के साथ-साथ संस्कार, कौशल एवं सामाजिक उत्तरदायित्व से भी समृद्ध हों।

अनुसंधान के क्षेत्र में भी विश्वविद्यालय ने उल्लेखनीय पहल करते हुए भारतीय ज्ञान परम्परा को शोध की मुख्यधारा से जोड़ने, शोध की गुणवत्ता बढ़ाने तथा नीति-निर्माण से जुड़ी शोध संस्कृति विकसित करने का प्रयास किया। साथ ही शिक्षकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के लिए नवीन अवसर सृजित किए गए, जिससे विश्वविद्यालय की शोध एवं नवाचार क्षमता को नई दिशा प्राप्त हुई।

पारदर्शी, उत्तरदायी एवं तकनीक-सक्षम प्रशासन की स्थापना हेतु विश्वविद्यालय की अनेक सेवाओं का डिजिटलीकरण किया गया। परीक्षा व्यवस्था में सुधार, समयबद्ध परिणाम, ऑन-स्क्रीन मूल्यांकन, वित्तीय अनुशासन, प्रशासनिक पारदर्शिता तथा अधोसंरचना विकास के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त हुईं।

इन उपलब्धियों के पीछे आपके सतत मार्गदर्शन, राज्य सरकार के सहयोग, विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों, शोधार्थियों, पूर्व विद्यार्थियों तथा समाज के विभिन्न वर्गों का अमूल्य सहयोग रहा है। विश्वविद्यालय परिवार आप सबके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता है।

मुझे विश्वास है कि यह प्रतिवेदन विश्वविद्यालय की विकास यात्रा का समग्र चित्र प्रस्तुत करेगा तथा भविष्य की कार्ययोजना को और अधिक प्रभावी बनाने में मार्गदर्शक सिद्ध होगा।

सादर !

भवनिष्ठ

(प्रो. (डॉ.) सुरेश कुमार अग्रवाल)
कुलगुरु

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	पृष्ठ संख्या
1	आवरण पृष्ठ	
2	माननीय कुलाधिपति महोदय के नाम कुलगुरु का निवेदन	2 - 3
3	कार्यकारी सारांश (Executive Summary)	5
4	प्रस्तावना – *विकास भी, विरासत भी*	7
5	राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का प्रभावी क्रियान्वयन	7
6	शोध एवं नवाचार	9
7	राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक सहयोग	10
8	राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ एवं अकादमिक गतिविधियाँ	11
9	शिक्षक विकास एवं मानव संसाधन	12
10	कर्मचारी कल्याण एवं प्रशासनिक संवेदनशीलता	12
11	विद्यार्थी कल्याण एवं सशक्तिकरण	13
12	उद्योग–शिक्षा समन्वय एवं कौशल विकास	14
13	रोजगारोन्मुख नवीन पाठ्यक्रम	14
14	डिजिटल प्रशासन एवं ई-गवर्नेंस	15
15	आधारभूत संरचना विकास	15
16	हरित एवं पर्यावरणीय पहल	16
17	गुणवत्ता आश्वासन एवं सुशासन	17
18	परीक्षा सुधार : पारदर्शिता, विश्वसनीयता एवं समयबद्धता की नई व्यवस्था	17
19	खेल, संस्कृति एवं सह-पाठ्यचर्या गतिविधियाँ	18
20	भारतीय संस्कृति, जीवन-मूल्य एवं विश्वविद्यालय की विशिष्ट पहचान	18
21	राष्ट्रीय स्तर पर नेतृत्व एवं संस्थागत प्रतिष्ठा	19
22	प्रशासनिक एवं संस्थागत सुधार	19
23	वित्तीय अनुशासन एवं संसाधनों का प्रभावी प्रबंधन	20
24	भवन रखरखाव एवं आधारभूत संरचना विस्तार	20
25	अतिक्रमण मुक्त परिसर की दिशा में प्रभावी पहल	21
26	आगामी कार्ययोजना : उत्कृष्टता की ओर अग्रसर विश्वविद्यालय	21
27	परिवर्तन, उत्कृष्टता एवं उत्तरदायित्व की एक वर्ष की यात्रा	21-22

कार्यकारी सारांश

वर्ष 2025-26 महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर के लिए परिवर्तनकारी उपलब्धियों का वर्ष रहा। विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप शिक्षा, अनुसंधान, प्रशासन, परीक्षा, पर्यावरण संरक्षण, वित्तीय प्रबंधन, अधोसंरचना विकास तथा विद्यार्थी कल्याण के क्षेत्रों में व्यापक सुधार लागू किए। इन सुधारों का उद्देश्य केवल प्रशासनिक दक्षता बढ़ाना नहीं था, बल्कि विश्वविद्यालय को भविष्य उन्मुख, शोधप्रधान, कौशल-सम्पन्न, विद्यार्थी-केंद्रित तथा भारतीय ज्ञान परम्परा से अनुप्राणित उत्कृष्ट संस्थान के रूप में विकसित करना था।

शैक्षणिक क्षेत्र में विश्वविद्यालय ने स्नातक स्तर पर सेमेस्टर प्रणाली एवं क्रेडिट आधारित शिक्षा प्रणाली लागू करने का निर्णय लेकर राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रभावी क्रियान्वयन की दिशा में ऐतिहासिक कदम उठाया। रोजगारोन्मुख शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए इंटर्नशिप आधारित क्रेडिट, कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम, वैल्यू एडेड कोर्स तथा बहुविषयक अध्ययन व्यवस्था विकसित की गई। तीर्थराज पुष्कर, कर्मयोग, मतदाता साक्षरता तथा पर्यावरण शिक्षा जैसे विशिष्ट पाठ्यक्रमों के माध्यम से शिक्षा को भारतीय जीवन-दृष्टि एवं सामाजिक उत्तरदायित्व से जोड़ा गया।

अनुसंधान एवं नवाचार के क्षेत्र में विश्वविद्यालय ने राजस्थान का प्रथम विश्वविद्यालय बनकर SHODHCHAKRA Research Management System अपनाया। शिक्षकों के लिए Enhance Studies Enhance Development (ESED) योजना प्रारम्भ की गई, जिसके अंतर्गत शोध परियोजनाओं को आर्थिक सहयोग प्रदान किया गया। शोध प्रबंधों में भारतीय ज्ञान परम्परा को अनिवार्य बनाकर शोध को भारतीय दृष्टिकोण से जोड़ने का अभिनव प्रयास किया गया।

विद्यार्थी कल्याण विश्वविद्यालय की प्राथमिकता रहा। Learn Earn and Perform Scheme, Finishing School, Placement Cell तथा Student Facilitation Centre जैसी पहलों के माध्यम से विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के साथ रोजगारोन्मुख अवसर उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया। Artificial Intelligence, Cyber Security, Digital Marketing तथा MCA in Data Analytics जैसे आधुनिक विषयों में नए पाठ्यक्रम प्रारम्भ कर विद्यार्थियों को भविष्य की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार किया गया।

परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता एवं विश्वसनीयता सुनिश्चित करने के लिए निजी परीक्षा केन्द्र समाप्त किए गए, सरकारी संस्थानों में परीक्षा केन्द्र स्थापित किए गए तथा ऑन-स्क्रीन मूल्यांकन एवं डिजिटल परीक्षा सेवाओं का विस्तार किया गया। समयबद्ध परिणामों एवं नियमित शैक्षणिक सत्र ने विश्वविद्यालय की शैक्षणिक विश्वसनीयता को नई पहचान प्रदान की।

प्रशासनिक क्षेत्र में Rajkaj Portal, Online Admission, Online Migration, Online Ph.D. Viva तथा अन्य अनेक सेवाओं का डिजिटलीकरण किया गया। प्रत्येक विभाग का वार्षिक कैलेंडर तैयार कराया गया तथा Academic एवं Administrative Calendar लागू कर प्रशासन को अधिक उत्तरदायी एवं समयबद्ध बनाया गया।

पर्यावरण संरक्षण विश्वविद्यालय की विशिष्ट पहचान के रूप में उभरा। Biofuel Campus, Zero Carbon Campus, Rooftop Solar, Compost Unit, Electric Vehicles, Biodiversity Promotion, QR आधारित पौध टैगिंग तथा IoT आधारित Plant Monitoring (In Pipeline) जैसी पहलें विश्वविद्यालय को हरित एवं स्मार्ट परिसर के रूप में विकसित करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुईं।

वित्तीय अनुशासन स्थापित करने हेतु अनावश्यक व्यय में कमी, आउटसोर्सिंग खर्च में बचत, लंबित उपयोगिता प्रमाण-पत्रों (UC) का प्रेषण तथा Rate Contract प्रणाली लागू की गई।

अधोसंरचना विकास के अंतर्गत विभिन्न भवनों के रखरखाव एवं मरम्मत, वैज्ञानिक उपकरणों की खरीद, स्मार्ट कक्षाओं की स्थापना तथा प्रयोगशालाओं के आधुनिकीकरण की दिशा में उल्लेखनीय कार्य हुए।

यह वर्ष विश्वविद्यालय के लिए केवल उपलब्धियों का वर्ष नहीं, बल्कि एक ऐसी कार्यसंस्कृति की स्थापना का वर्ष रहा जिसमें गुणवत्ता, पारदर्शिता, उत्तरदायित्व, भारतीयता, नवाचार, पर्यावरणीय संवेदनशीलता एवं सुशासन को संस्थागत स्वरूप प्रदान किया गया।

(प्रो. (डॉ.) सुरेश कुमार अग्रवाल)
कुलगुरु

प्रस्तावना

"विकास भी, विरासत भी" के पावन संकल्प के साथ महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय आत्मनिर्भर भारत और विकसित भारत 2047 के राष्ट्रीय स्वप्न को साकार करने हेतु सतत अग्रसर है। एक ओर आधुनिक शिक्षा को अनुसंधान, नवाचार, कौशल विकास और प्रौद्योगिकी के माध्यम से भविष्य का निर्माण किया जा रहा है, तो दूसरी ओर भारतीय ज्ञान परंपरा, सांस्कृतिक विरासत और मानवीय मूल्यों का संरक्षण एवं संवर्धन हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है। इस हेतु विश्वविद्यालय ने "निर्माण" (Build) की तुलना में सृजन (Create) को प्राथमिकता दी है। हमारा विश्वास है कि जड़ों से जुड़कर ही शिखर तक पहुंचा जा सकता है। यह एक वर्ष का रिपोर्ट कार्ड किसी संतुलित, समावेशी और राष्ट्रोन्मुखी विकास यात्रा का साक्षी है।

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का प्रभावी क्रियान्वयन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 उच्च शिक्षा में स्वतंत्रता, लचीलापन, बहुविषयकता, कौशल, नवाचार तथा भारतीय ज्ञान परम्परा के समन्वय का व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय ने इस नीति को केवल औपचारिक रूप से लागू करने के स्थान पर इसे विश्वविद्यालय की संपूर्ण शैक्षणिक व्यवस्था का आधार बनाने का निर्णय लिया। इसी दृष्टि से विगत एक वर्ष के दौरान व्यापक शैक्षणिक सुधारों की प्रक्रिया प्रारम्भ की गई। सत्र 2026-27 से स्नातक स्तर पर सेमेस्टर प्रणाली लागू करने का निर्णय विश्वविद्यालय के इतिहास का एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। इसके साथ ही क्रेडिट आधारित शिक्षा प्रणाली को अपनाते हुए विद्यार्थियों को अधिक लचीला एवं परिणामोन्मुख शिक्षण वातावरण प्रदान करने की दिशा में ठोस कदम उठाए गए। मूल्यांकन पद्धति को परिवर्धित (shift from information to application) कर उसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति की भावना के अनुरूप बनाया गया तथा पाठ्यक्रमों का व्यापक पुनरीक्षण किया गया, जिससे शिक्षा अधिक समकालीन, बहुआयामी एवं रोजगारोन्मुख बन सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के मूल उद्देश्य—"सीखना, कौशल विकसित करना तथा जीवनोपयोगी ज्ञान अर्जित करना"—को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय ने Ability Enhancement Courses (AEC), Skill Enhancement Courses (SEC), Value Added Courses

(VAC) पाठ्यक्रम निर्मित किए हैं। इन पाठ्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों में संचार कौशल, नेतृत्व क्षमता, उद्यमिता, समस्या समाधान, डिजिटल दक्षता तथा व्यावसायिक योग्यता का विकास सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया। इन्हें आगामी सत्र से लागू कर दिया जाएगा |

भारतीय ज्ञान परम्परा एवं स्थानीय सांस्कृतिक विरासत को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग बनाने के उद्देश्य से विश्वविद्यालय ने महर्षि दयानंद सरस्वती, तीर्थराज पुष्कर, कर्मयोग, मतदाता साक्षरता तथा पर्यावरण शिक्षा जैसे अभिनव मूल्य संवर्धित (value added) पाठ्यक्रम विकसित किए हैं। इन्हें भी आगामी सत्र से लागू करने की योजना बनी है | इन पाठ्यक्रमों का उद्देश्य विद्यार्थियों में सांस्कृतिक चेतना, नैतिक मूल्यों, लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व एवं पर्यावरणीय संवेदनशीलता का विकास करना है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति की बहुविषयक अवधारणा को साकार करने हेतु Multidisciplinary Courses तैयार किए गए तथा स्नातकोत्तर स्तर पर भी इसी प्रकार की व्यवस्था लागू करने के लिए विस्तृत प्रारूप विकसित किया गया। साथ ही SWAYAM प्लेटफ़ॉर्म के पाठ्यक्रमों को अपनाकर विद्यार्थियों को राष्ट्रीय स्तर के श्रेष्ठ शिक्षण संसाधनों से जोड़ने की दिशा में कार्य किया जा रहा है, जिसे आगामी वर्ष तक संपूर्ण कर लागू कर दिया जाएगा। विश्वविद्यालय ने Dual Degree System लागू कर विद्यार्थियों के लिए बहुविषयक अध्ययन के नए अवसर उपलब्ध कराए हैं। एक ही शैक्षणिक वर्ष में दो बार प्रवेश (Biannual Admission) की व्यवस्था के लिए सक्षम निकायों से अनुमोदन प्राप्त कर कर लिया गया है जिसे आगामी सत्र से क्रियान्वित किए जाने की योजना बनी है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन पर व्यापक विमर्श के उद्देश्य से विश्वविद्यालय द्वारा राज्य स्तरीय राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें माननीय उपमुख्यमंत्री एवं उच्च शिक्षा मंत्री, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ अध्यक्ष प्रो नारायण लाल गुप्ता एवं संगठन मंत्री माननीय श्री महेंद्र जी कपूर, वरिष्ठ शिक्षाविदों तथा नीति-निर्माताओं ने सहभागिता कर विश्वविद्यालय के प्रयासों की सराहना की तथा भविष्य की दिशा पर महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान किया। इस अवसर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति - 2020 की मुख्य विशेषताओं पर आधारित एक पुस्तक का प्रकाशन भी किया गया |

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के क्रियान्वयन की दिशा में विश्वविद्यालय द्वारा किए गए ये प्रयास न केवल शैक्षणिक सुधारों का प्रतीक हैं, बल्कि भविष्य की ऐसी उच्च शिक्षा व्यवस्था की

आधारशिला भी हैं जो विद्यार्थियों को समग्र शिक्षा (Holistic Education)-ज्ञान, कौशल, संस्कार और रोजगार—चारों स्तरों पर सशक्त बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है।

2. शोध एवं नवाचार

किसी भी विश्वविद्यालय की वास्तविक पहचान उसके शोध, नवाचार एवं ज्ञान-सृजन से होती है। इसी तथ्य को आधार बनाते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय ने विगत एक वर्ष में अनुसंधान व्यवस्था में अनेक ऐसे संरचनात्मक सुधार किए, जिन्होंने विश्वविद्यालय की शोध संस्कृति को नई दिशा एवं नई गति प्रदान की। विश्वविद्यालय का उद्देश्य केवल शोध की संख्या बढ़ाना नहीं, बल्कि ऐसे शोध को प्रोत्साहित करना रहा जो समाज, शासन, उद्योग तथा राष्ट्र निर्माण के लिए उपयोगी सिद्ध हो।

महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय SHODHCHAKRA Research Management System अपनाकर शोध प्रक्रिया का डिजिटलीकरण करने वाला प्रदेश का प्रथम विश्वविद्यालय बन गया है। इस प्रणाली के माध्यम से शोधार्थियों का पंजीकरण, शोध निर्देशक का आवंटन, शोध प्रगति की सतत निगरानी, शोध प्रबंध का मूल्यांकन तथा अन्य समस्त प्रक्रियाओं को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी एवं समयबद्ध बनाया जा रहा है। इससे शोध कार्यों की गुणवत्ता में वृद्धि होने के साथ-साथ प्रशासनिक दक्षता भी सुनिश्चित हुई है।

विश्वविद्यालय ने शोध को प्रोत्साहित करने के लिए विश्वविद्यालय के संकाय सदस्यों हेतु Enhance Studies Enhance Development (ESED) योजना प्रारम्भ की है। इस अभिनव योजना के अंतर्गत विश्वविद्यालय के शिक्षकों को शोध परियोजनाओं के लिए दो लाख रुपये तक की वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने का प्रावधान किया गया है। इस पहल का उद्देश्य शिक्षकों में स्वतंत्र अनुसंधान, नवाचार तथा समाजोपयोगी शोध की संस्कृति को प्रोत्साहित करना है। विश्वविद्यालय का विश्वास है कि गुणवत्तापूर्ण शोध ही उत्कृष्ट शिक्षण का आधार है तथा वही समाज के समक्ष नई संभावनाओं के द्वार खोलता है।

भारतीय ज्ञान परम्परा को अनुसंधान की मुख्यधारा से जोड़ना इस वर्ष की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक रहा। विश्वविद्यालय ने प्रत्येक शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय में भारतीय ज्ञान परम्परा से संबंधित विमर्श को अनिवार्य किया, ताकि शोध केवल पाश्चात्य सिद्धांतों तक सीमित न रहकर भारत की समृद्ध दार्शनिक, वैज्ञानिक एवं सांस्कृतिक परम्पराओं से भी संवाद स्थापित कर सके। यह पहल राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की भावना के अनुरूप भारतीय ज्ञान प्रणाली की

पुनर्स्थापन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। पंडित दीनदयाल उपाध्याय शोधपीठ की स्थापना भी की गई है |

विश्वविद्यालय ने शोध प्रक्रिया में भारतीय शास्त्रार्थ परम्परा को भी पुनर्जीवित करने का प्रयास किया है। शोधार्थियों को शोध की भारतीय परंपरा (विश्वविद्यालय के शोध अध्यादेशों मे इस हेतु परिवर्तन किया गया है) - तार्किक विमर्श, वैचारिक विश्लेषण तथा बौद्धिक संवाद- के माध्यम से अपने शोध को और अधिक प्रामाणिक एवं समृद्ध बनाने के लिए प्रेरित किया गया है। इससे शोध केवल औपचारिक डिग्री प्राप्त करने का माध्यम न रहकर ज्ञान-सृजन एवं बौद्धिक नेतृत्व का सशक्त साधन बन सकेगा।

शोध की गुणवत्ता को और अधिक सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से शोध प्रस्ताव (Synopsis) के प्रारूप में व्यापक संशोधन किए गए तथा नवीन Research Guidelines जारी की गई। शोध की सामाजिक उपयोगिता सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक शोधार्थी के शोधग्रंथ में Policy Implications को अनिवार्य बनाया गया है, ताकि शोध के निष्कर्ष शासन, नीति-निर्माण, उद्योग एवं समाज के लिए प्रत्यक्ष रूप से उपयोगी बन सकें।

संबद्ध महाविद्यालयों में पीएच.डी. शुल्क की एकरूपता स्थापित कर निजी संस्थानों द्वारा अतिरिक्त शुल्क वसूली की प्रवृत्ति पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित किया गया। इससे शोधार्थियों के आर्थिक हितों की रक्षा हुई तथा विश्वविद्यालय की शोध प्रणाली में समानता एवं पारदर्शिता को बढ़ावा मिला। संबद्ध महाविद्यालयों मे शोध को बढ़ावा मिले एवं संगोष्ठियों का आयोजन हो, इस हेतु कोष का प्रावधान किया गया है | विश्वविद्यालय ने त्रैमासिक 'त्रिवेणी' का प्रकाशन शुरू किया है जिसके चार अंक प्रकाशित हो चुके हैं |

इन समस्त प्रयासों के परिणामस्वरूप विश्वविद्यालय में शोध का वातावरण अधिक उत्तरदायी, नवाचारी, भारतीय दृष्टि से समृद्ध तथा समाजोपयोगी बनकर उभरा है। विश्वविद्यालय का लक्ष्य आने वाले वर्षों में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अनुसंधान उत्कृष्टता का अग्रणी केन्द्र बनना है।

3. राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक सहयोग

वर्तमान समय में किसी भी विश्वविद्यालय की प्रगति का एक महत्वपूर्ण आधार राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थानों के साथ उसका शैक्षणिक सहयोग है। इसी दृष्टिकोण को अपनाते हुए महर्षि

दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय ने विगत एक वर्ष में विभिन्न विश्वविद्यालयों, अनुसंधान संस्थानों एवं उद्योग जगत के साथ सहयोग का व्यापक विस्तार किया।

विश्वविद्यालय द्वारा लगभग पंद्रह प्रतिष्ठित संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापन (MoU) संपादित किए गए, जिनका उद्देश्य संयुक्त शोध, शिक्षक एवं विद्यार्थी विनिमय, कौशल विकास, नवाचार तथा अकादमिक सहयोग को प्रोत्साहित करना है। इस दिशा में बीकानेर तकनीकी विश्वविद्यालय, संगम विश्वविद्यालय, Amity, डॉ. शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय सहित अनेक प्रतिष्ठित संस्थानों के साथ MoU किया गया है।

इसके अतिरिक्त गुजरात, जम्मू, हिमाचल प्रदेश तथा पंजाब के केंद्रीय विश्वविद्यालयों के साथ भी MoU की प्रक्रिया प्रारम्भ की गई है। इन पहलों के माध्यम से विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को राष्ट्रीय स्तर के संसाधनों, विशेषज्ञता एवं शोध अवसरों का लाभ प्राप्त होगा। विश्वविद्यालय का उद्देश्य केवल औपचारिक समझौते करना नहीं, बल्कि ऐसे सहयोगात्मक तंत्र का निर्माण करना है जिसके माध्यम से संयुक्त शोध परियोजनाएँ, नवाचार, इंटर्नशिप, अकादमिक आदान-प्रदान तथा उद्योगोन्मुख शिक्षा को प्रभावी रूप से आगे बढ़ाया जा सके। यह पहल विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्तर पर अधिक प्रतिस्पर्धी एवं वैश्विक दृष्टि से अधिक सक्षम बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण सिद्ध होगी।

4. राष्ट्रीय संगोष्ठियाँ एवं अकादमिक गतिविधियां

विश्वविद्यालय ने शैक्षणिक वातावरण को जीवंत, संवादपरक एवं शोधोन्मुख बनाने के उद्देश्य से वर्षभर विभिन्न राष्ट्रीय संगोष्ठियों, कार्यशालाओं एवं अकादमिक कार्यक्रमों का आयोजन किया। इन आयोजनों ने शिक्षकों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों को समकालीन विषयों पर विचार-विमर्श एवं ज्ञान-विनिमय का प्रभावी मंच प्रदान किया।

इस अवधि में पंद्रह से अधिक राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन किया गया। संविधान विषयक राष्ट्रीय कार्यशाला के माध्यम से संवैधानिक मूल्यों, लोकतांत्रिक उत्तरदायित्व तथा नागरिक कर्तव्यों पर सार्थक विमर्श हुआ। सिंधी भाषा पर आयोजित राष्ट्रीय कार्यशाला ने भारतीय भाषाई एवं सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की दिशा में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसके अतिरिक्त विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, भारतीय ज्ञान परम्परा, पर्यावरण, साहित्य, शिक्षा तथा समकालीन राष्ट्रीय विषयों पर राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन किया गया।

इन आयोजनों के माध्यम से विश्वविद्यालय ने स्वयं को केवल शिक्षण संस्था तक सीमित न रखते हुए ज्ञान, विचार एवं नवाचार के सक्रिय केन्द्र के रूप में स्थापित किया है।

5. शिक्षक विकास एवं मानव संसाधन

किसी भी विश्वविद्यालय की उत्कृष्टता उसके शिक्षकों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय ने शिक्षकों के सतत व्यावसायिक विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की। मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र के माध्यम से लगभग 2500 शिक्षकों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, Outcome Based Education, भारतीय ज्ञान परम्परा, अनुसंधान पद्धति तथा आधुनिक शिक्षण तकनीकों से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

वर्षभर Orientation & Sensitization Programmes, Faculty Development Programmes, Refresher Courses तथा Short Term Courses का सफल आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षकों को नवीन शिक्षण पद्धतियों, डिजिटल तकनीकों, शोध नवाचार तथा विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षण दृष्टिकोण से परिचित कराया गया।

शिक्षकों के कैरियर विकास को गति देने के लिए Career Advancement Scheme (CAS) के अंतर्गत लंबित पदोन्नति प्रकरणों का त्वरित निस्तारण कर प्रक्रिया को अंतिम चरण तक पहुँचाया गया है। विश्वविद्यालय का उद्देश्य योग्यता, पारदर्शिता एवं समयबद्धता के आधार पर शिक्षकों के व्यावसायिक विकास को सुनिश्चित करना है।

6. कर्मचारी कल्याण एवं प्रशासनिक संवेदनशीलता

विश्वविद्यालय की प्रगति में शिक्षकों के साथ-साथ कर्मचारियों की भूमिका भी समान रूप से महत्वपूर्ण होती है। इसी भावना के अनुरूप कर्मचारी कल्याण को प्रशासन की प्रमुख प्राथमिकताओं में सम्मिलित किया गया। कर्मचारियों मे व्यावसायिक दक्षता हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रमों का समय- समय पर आयोजन किया गया।

विगत एक वर्ष के दौरान विश्वविद्यालय ने पेंशन कोष में अतिरिक्त पचास करोड़ रुपये का योगदान कर कर्मचारियों के भविष्य को अधिक सुरक्षित बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया। विभागीय पदोन्नति समिति (DPC) की प्रक्रिया को गति देते हुए उसे अंतिम चरण तक पहुँचाया गया है। शिक्षकों एवं कर्मचारियों के वर्षों से लंबित विभिन्न सेवा संबंधी प्रकरणों का प्राथमिकता के आधार पर निस्तारण किया गया है तथा जिन मामलों में राज्य सरकार के स्तर पर

निर्णय अपेक्षित था, उन्हें आवश्यक अभिमत सहित समयबद्ध रूप से प्रेषित किया गया। दिवंगत कर्मचारियों के आश्रितों को अनुकंपात्मक नियुक्तियाँ प्रदान की गईं।

विश्वविद्यालय प्रशासन ने संवाद, पारदर्शिता एवं संवेदनशीलता को अपनी कार्यशैली का आधार बनाया। कर्मचारियों की समस्याओं के त्वरित समाधान, कार्यस्थल पर सकारात्मक वातावरण, सेवा हितों की सुरक्षा तथा प्रशासनिक प्रक्रियाओं के सरलीकरण के माध्यम से एक सहभागी एवं उत्तरदायी प्रशासन विकसित करने का सतत प्रयास किया गया।

इन पहलों का परिणाम यह रहा कि विश्वविद्यालय में कार्य संस्कृति अधिक सकारात्मक, उत्तरदायी एवं समन्वयपूर्ण बनी, जिसने संस्थागत विकास की गति को और अधिक सुदृढ़ किया।

7. विद्यार्थी कल्याण एवं सशक्तिकरण

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय ने यह सुनिश्चित किया कि विश्वविद्यालय की प्रत्येक योजना का केन्द्र विद्यार्थी हो। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की भावना के अनुरूप विद्यार्थियों को केवल गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही नहीं, बल्कि आर्थिक सहयोग, कौशल विकास, रोजगार मार्गदर्शन तथा व्यक्तित्व विकास के समुचित अवसर उपलब्ध कराने हेतु अनेक अभिनव पहल की गईं।

इस दिशा में Learn Earn and Perform (LEaP) Scheme विश्वविद्यालय की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों में से एक रही। इस योजना के माध्यम से विद्यार्थियों को अध्ययन के साथ-साथ विश्वविद्यालय में विभिन्न शैक्षणिक एवं प्रशासनिक गतिविधियों में सहभागिता का अवसर प्रदान करते हुए आर्थिक सहयोग उपलब्ध कराने की व्यवस्था विकसित की गई। यह योजना विद्यार्थियों में कार्य-संस्कृति, आत्मनिर्भरता, उत्तरदायित्व तथा व्यावहारिक अनुभव विकसित करने की दिशा में एक अभिनव प्रयास है।

विद्यार्थियों को रोजगारोन्मुख बनाने के उद्देश्य से Finishing School की स्थापना की गई, जहाँ संचार कौशल, व्यक्तित्व विकास, समूह चर्चा, साक्षात्कार कौशल, डिजिटल दक्षता तथा व्यावसायिक व्यवहार जैसे विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान करने की व्यवस्था विकसित की गई है। इसके साथ ही Placement Cell को सक्रिय बनाकर उद्योगों एवं संस्थानों के साथ संवाद स्थापित किया गया ताकि विद्यार्थियों को रोजगार एवं इंटर्नशिप के अधिकाधिक अवसर प्राप्त हो सकें। इसका सुखद परिणाम यह हुआ है कि इस वर्ष लगभग 85% से अधिक विद्यार्थियों का नियोजन हुआ है। विद्यार्थियों की समस्याओं के त्वरित समाधान हेतु Student Facilitation Centre स्थापित किया गया। इस केन्द्र के माध्यम से परीक्षा संबन्धित सेवाओं को एकीकृत रूप

में उपलब्ध कराने की व्यवस्था विकसित की गई है। साथ ही विश्वविद्यालय में NCC प्रारम्भ करने की प्रक्रिया को अंतिम चरण तक पहुँचाया गया है इसे वर्तमान अकादमिक सत्र से प्रारंभ कर दिया जाएगा। Rover and Scouts गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों में नेतृत्व, अनुशासन, सेवा भावना एवं राष्ट्रीय चेतना को प्रोत्साहित किया गया। इन पहलों का उद्देश्य विद्यार्थियों को केवल डिग्रीधारी नहीं, बल्कि उत्तरदायी, आत्मनिर्भर, कुशल एवं राष्ट्र निर्माण के लिए प्रतिबद्ध नागरिक के रूप में विकसित करना है। NSS विंग द्वारा स्वच्छता एवं रखरखाव से संबद्ध महत्वपूर्ण कार्य किया जा रहा है। विद्यार्थियों की विश्वविद्यालय तक सुगम पहुँच सुनिश्चित करने हेतु नगर निगम के माध्यम से सिटी बस सेवा विश्वविद्यालय तक संचालित हो रही है।

8. उद्योग–शिक्षा समन्वय एवं कौशल विकास

विश्वविद्यालय ने उच्च शिक्षा को उद्योग एवं समाज की आवश्यकताओं से जोड़ने के उद्देश्य से उद्योग–शिक्षा समन्वय को विशेष प्राथमिकता प्रदान की। इस दिशा में नगर निगम, NASSCOM, इंजीनियरिंग महाविद्यालय के साथ समझौता ज्ञापन संपादित किए गए। इन सहयोगों का उद्देश्य विद्यार्थियों को उद्योगोन्मुख प्रशिक्षण, इंटर्नशिप, परियोजना कार्य तथा रोजगार के बेहतर अवसर उपलब्ध कराना है।

विश्वविद्यालय ने Swadeshi Consortium की स्थापना का अभिनव निर्णय लिया, जिसके माध्यम से उद्योग, अनुसंधान संस्थानों, स्टार्टअप, नवाचार केन्द्रों तथा कौशल विकास संस्थाओं को एक साझा मंच पर लाने की परिकल्पना की गई। यह पहल आत्मनिर्भर भारत की भावना के अनुरूप स्थानीय ज्ञान, स्वदेशी तकनीक, उद्यमिता एवं नवाचार को प्रोत्साहित करेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के अनुरूप Professor of Practice (Hon) की नियुक्ति की गई, जिससे उद्योग, प्रशासन, संस्कृति तथा सामाजिक क्षेत्र के अनुभवी विशेषज्ञ विद्यार्थियों के साथ अपने व्यावहारिक अनुभव साझा कर सकें। इससे शिक्षण को अधिक व्यवहारिक, समसामयिक एवं रोजगारपरक स्वरूप प्राप्त होगा।

9. रोजगारोन्मुख नवीन पाठ्यक्रम

विश्वविद्यालय ने बदलती वैश्विक परिस्थितियों एवं रोजगार बाजार की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए अनेक नवीन एवं रोजगारपरक पाठ्यक्रम प्रारम्भ किए। MCA in Data Analytics, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence), साइबर सुरक्षा (Cyber Security)

तथा डिजिटल मार्केटिंग जैसे उभरते क्षेत्रों में प्रमाण-पत्र एवं डिप्लोमा कार्यक्रम प्रारम्भ किए गए, जिससे विद्यार्थियों को आधुनिक तकनीकी दक्षता प्राप्त हो सके।

भारतीय ज्ञान परम्परा को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से एम.ए. संस्कृत (वैदिक वाङ्मय) प्रारम्भ किया गया। साथ ही एम.ए. अंग्रेजी कार्यक्रम को समकालीन वैश्विक आवश्यकताओं एवं बहुविषयक दृष्टिकोण के अनुरूप विकसित किया गया। विश्वविद्यालय की नीति स्पष्ट रही है कि प्रत्येक नया पाठ्यक्रम ज्ञान, कौशल, रोजगार एवं राष्ट्रीय आवश्यकताओं के मध्य संतुलन स्थापित करे।

10. डिजिटल प्रशासन एवं ई-गवर्नेंस

विश्वविद्यालय प्रशासन को पूर्णतः पारदर्शी, उत्तरदायी एवं समयबद्ध बनाने के उद्देश्य से व्यापक डिजिटल सुधार लागू किए गए। Rajkaj Portal को अपनाकर प्रशासनिक प्रक्रियाओं का सुव्यवस्थित डिजिटलीकरण किया गया। प्रवेश, परीक्षा, ऑन-स्क्रीन मूल्यांकन, पीएच.डी. वाइवा, माइग्रेशन, अंकतालिका एवं अन्य सेवाओं को ऑनलाइन उपलब्ध कराया गया, जिससे विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को शीघ्र, पारदर्शी एवं सुविधाजनक सेवाएँ प्राप्त होने लगीं हैं।

प्रत्येक विभाग एवं अनुभाग को वार्षिक कार्य कैलेंडर तैयार करने के निर्देश दिए गए तथा विश्वविद्यालय स्तर पर Academic Calendar एवं Administrative Calendar लागू किए गए हैं। अवकाश प्रबंधन के लिए एकरूप Leave Format निर्धारित किया गया तथा उत्तरदायित्व सुनिश्चित करने के लिए Incharge Officer System विकसित किया गया। इन सुधारों से प्रशासनिक कार्यप्रणाली अधिक अनुशासित, उत्तरदायी एवं परिणामोन्मुख बनी।

11. आधारभूत संरचना विकास

विश्वविद्यालय ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षण एवं अनुसंधान के लिए आवश्यक आधारभूत संरचना के विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दी। RUSA के अंतर्गत लगभग 70 लाख के वैज्ञानिक उपकरणों की खरीद की प्रक्रिया प्रारम्भ की गई तथा इसके अतिरिक्त लगभग ₹1.80 करोड़ के आधुनिक उपकरणों की खरीद की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई है। इन उपकरणों से वनस्पति विज्ञान, प्राणी विज्ञान, रसायन विज्ञान तथा सूक्ष्मजीव विज्ञान जैसे विभागों की प्रयोगशालाओं को सुदृढ़ बनाया जा रहा है।

इसके अतिरिक्त विभिन्न विभागों के लिए आधुनिक फर्नीचर की व्यवस्था की गई, Video Conferencing Room स्थापित किया जा रहा है तथा शिक्षण को तकनीक-सक्षम बनाने के

उद्देश्य से Smart Boards उपलब्ध कराए जाने की योजना है। इन पहलों का उद्देश्य विद्यार्थियों एवं शोधार्थियों को आधुनिक अधिगम वातावरण उपलब्ध कराना तथा विश्वविद्यालय को डिजिटल एवं अनुसंधान-समर्थ परिसर के रूप में विकसित करना है।

इस प्रकार विद्यार्थी कल्याण, कौशल विकास, डिजिटल प्रशासन एवं अधोसंरचना के क्षेत्रों में किए गए ये प्रयास विश्वविद्यालय को एक आधुनिक, उत्तरदायी, रोजगारपरक एवं विद्यार्थी-केंद्रित संस्थान के रूप में स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण मील का पत्थर सिद्ध हुए है।

12. हरित एवं पर्यावरणीय पहल

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय ने पर्यावरण संरक्षण को केवल एक कार्यक्रम के रूप में नहीं, बल्कि अपनी संस्थागत कार्यसंस्कृति का अभिन्न अंग बनाया है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 तथा संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (Sustainable Development Goals) की भावना के अनुरूप विश्वविद्यालय ने हरित, स्वच्छ, ऊर्जा-कुशल एवं पर्यावरण-अनुकूल परिसर के विकास हेतु अनेक अभिनव पहलें प्रारम्भ कीं। इन प्रयासों का उद्देश्य विश्वविद्यालय को Green Campus, Smart Campus तथा Net Zero Carbon Campus के रूप में स्थापित करना है। विगत एक वर्ष में विश्वविद्यालय परिसर में Biofuel Campus की अवधारणा को मूर्त रूप प्रदान किया गया है। ऊर्जा संरक्षण एवं स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए Rooftop Solar System के विस्तार की कार्यवाही प्रारम्भ की गई है । जैविक अपशिष्टों के वैज्ञानिक प्रबंधन हेतु Compost Unit की स्थापना की गई तथा परिसर में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (Solid Waste Management) की सुव्यवस्थित व्यवस्था विकसित की गई। कार्बन उत्सर्जन को कम करने के उद्देश्य से परिसर में Electric Vehicles के उपयोग को प्रोत्साहित किया गया तथा पेट्रोल एवं डीजल आधारित वाहनों के उपयोग को चरणबद्ध रूप से सीमित करने की नीति अपनाई गई है ।

पर्यावरण संरक्षण को तकनीकी नवाचार से जोड़ते हुए विश्वविद्यालय ने पौधों की QR Code आधारित Tagging तथा IoT आधारित Plant Monitoring System विकसित करने की दिशा में कार्य प्रारम्भ किया। इससे प्रत्येक पौधे की प्रजाति, आयु, स्थान एवं संरक्षण की स्थिति का डिजिटल रिकॉर्ड तैयार किया जा सकेगा। परिसर में Bio Resource Centre की स्थापना तथा जैव विविधता संरक्षण के लिए व्यापक वृक्षारोपण अभियान संचालित किया गया है । इन पहलों ने विश्वविद्यालय को पर्यावरणीय उत्तरदायित्व एवं सतत विकास का एक अनुकरणीय मॉडल बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण आधार प्रदान किया है।

13. गुणवत्ता आश्वासन एवं सुशासन

विश्वविद्यालय ने गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, पारदर्शी प्रशासन एवं उत्तरदायी कार्यसंस्कृति को संस्थागत रूप प्रदान करने हेतु अनेक महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इस अवधि में विश्वविद्यालय का प्रथम दीक्षांत समारोह अत्यंत गरिमामय एवं सफलतापूर्वक आयोजित किया गया, जिसमें माननीय कुलाधिपति, राज्य सरकार के प्रतिनिधियों, शिक्षाविदों तथा विभिन्न क्षेत्रों की प्रतिष्ठित विभूतियों की उपस्थिति ने विश्वविद्यालय की बढ़ती प्रतिष्ठा को नई पहचान प्रदान की। इस अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री का संदेश प्राप्त होना विश्वविद्यालय के लिए गौरव का विषय रहा।

आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (IQAC) को और अधिक सक्रिय एवं सुदृढ़ बनाया गया। शैक्षणिक, प्रशासनिक एवं शोध गतिविधियों के नियमित मूल्यांकन की प्रणाली विकसित की गई तथा राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) की आगामी प्रत्यायन प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए सभी विभागों में गुणवत्ता मानकों के अनुरूप आवश्यक तैयारियाँ प्रारम्भ की गई हैं। विश्वविद्यालय ने यह सुनिश्चित किया कि प्रत्येक शैक्षणिक एवं प्रशासनिक निर्णय गुणवत्ता, पारदर्शिता, उत्तरदायित्व तथा समयबद्धता के सिद्धांतों पर आधारित हो।

14. परीक्षा सुधार : पारदर्शिता, विश्वसनीयता एवं समयबद्धता की नई व्यवस्था

विश्वविद्यालय ने परीक्षा प्रणाली को अधिक निष्पक्ष, पारदर्शी एवं तकनीक-सक्षम बनाने की दिशा में व्यापक सुधार लागू किए। नकल की प्रवृत्ति पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित करने के लिए जिला प्रशासन, पुलिस प्रशासन एवं विद्यार्थी संगठनों के सहयोग से सुदृढ़ निगरानी व्यवस्था विकसित की गई। निजी महाविद्यालय परीक्षा केन्द्रों को समाप्त कर सरकारी परीक्षा केन्द्रों पर परीक्षाएं संपन्न हुई। विश्वविद्यालय में Centralized Examination Centres की अवधारणा को लागू किया गया है। मूल्यांकन प्रक्रिया में गति एवं पारदर्शिता लाने हेतु On Screen Marking System का विस्तार किया गया है, जिससे परिणामों की गुणवत्ता एवं समयबद्धता दोनों में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। परीक्षा से संबंधित अनेक सेवाओं का डिजिटलीकरण किया गया तथा विद्यार्थियों को समय पर परिणाम उपलब्ध कराने की दिशा में प्रभावी कार्य किया गया। नियमित शैक्षणिक सत्र बनाए रखने के लिए संबद्ध महाविद्यालयों के साथ सतत समन्वय स्थापित किया गया, जिससे विश्वविद्यालय की परीक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। सम्पूर्ण प्रक्रिया पूर्ण करने के बाद विश्वविद्यालय ने APEX महाविद्यालय को स्वायत्तशासी महाविद्यालय का दर्जा प्रदान किया है।

15. खेल, संस्कृति एवं सह-पाठ्यचर्या गतिविधियाँ

विश्वविद्यालय का विश्वास है कि उत्कृष्ट शिक्षा का उद्देश्य केवल बौद्धिक विकास तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के शारीरिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक व्यक्तित्व का समग्र विकास भी उतना ही आवश्यक है। इसी दृष्टिकोण के साथ विगत एक वर्ष में विश्वविद्यालय ने खेल एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को नई ऊर्जा प्रदान की।

विश्वविद्यालय परिसर में पहली बार अंतर महाविद्यालयी खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया है, जिससे विद्यार्थियों में खेल भावना, नेतृत्व, अनुशासन एवं टीमवर्क की भावना विकसित हुई। इसी प्रकार अंतरमहाविद्यालयी सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के माध्यम से संगीत, नृत्य, नाटक, साहित्य एवं ललित कलाओं में विद्यार्थियों की प्रतिभा को मंच प्रदान किया गया। विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों ने राष्ट्रीय स्तर की सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में उल्लेखनीय प्रदर्शन करते हुए वाग्मिता (Elocution) में राष्ट्रीय स्तर पर तृतीय स्थान प्राप्त किया तथा West Zone प्रतियोगिताओं में अखिल भारतीय फ्री स्टाइल कुश्ती मे द्वितीय स्थान प्राप्त करके रजत पदक सहित अनेक विभिन्न पदक अर्जित कर विश्वविद्यालय का गौरव बढ़ाया।

16. भारतीय संस्कृति, जीवन-मूल्य एवं विश्वविद्यालय की विशिष्ट पहचान

महर्षि दयानन्द सरस्वती के आदर्शों पर आधारित इस विश्वविद्यालय ने सदैव यह विश्वास किया है कि विकास भी हो और विरासत का संरक्षण भी हो। इस हेतु भारतीय संस्कृति, जीवन-मूल्यों एवं आध्यात्मिक परम्पराओं को विश्वविद्यालय की कार्यसंस्कृति का अभिन्न अंग बनाने का सतत प्रयास हुआ है। विश्वविद्यालय का उद्देश्य आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के साथ भारतीय ज्ञान परम्परा का समन्वय स्थापित करते हुए विद्यार्थियों में नैतिकता, अनुशासन, कर्तव्यबोध एवं राष्ट्रभावना का विकास करना रहा है।

इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए विश्वविद्यालय परिसर में प्रतिदिन गायत्री मंत्र का प्रसारण प्रारम्भ किया गया तथा दैनिक प्रार्थना की परम्परा स्थापित की गई। प्रत्येक सोमवार को सामूहिक प्रार्थना का आयोजन किया जाने लगा, जिससे विश्वविद्यालय परिवार में सामूहिकता एवं सकारात्मक कार्यसंस्कृति का विकास हुआ। प्रत्येक शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यक्रम से पूर्व वैदिक परम्परा के अनुसार हवन आयोजित करने की परम्परा प्रारम्भ की गई। इन पहलों के माध्यम से विश्वविद्यालय परिसर में गुरुकुलीय वातावरण, भारतीय सांस्कृतिक चेतना एवं नैतिक मूल्यों पर आधारित एक

विशिष्ट शैक्षणिक संस्कृति विकसित हुई, जिसने विश्वविद्यालय को प्रदेश के अन्य विश्वविद्यालयों से एक विशिष्ट पहचान प्रदान की है।

17. राष्ट्रीय स्तर पर नेतृत्व एवं संस्थागत प्रतिष्ठा

महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय ने विगत एक वर्ष में न केवल संस्थागत स्तर पर उल्लेखनीय प्रगति की, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी सशक्त उपस्थिति दर्ज कराई। विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल को विभिन्न राष्ट्रीय शैक्षणिक एवं नीति-निर्माण संस्थाओं में महत्वपूर्ण दायित्व प्राप्त हुए, जिनसे विश्वविद्यालय की प्रतिष्ठा और विश्वसनीयता में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

इस अवधि में कुलगुरु ने क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (RIE) के अध्यक्ष, CBSE की गवर्निंग बॉडी के सदस्य तथा विभिन्न विश्वविद्यालयों के सिंडिकेट, प्रबंध मण्डल एवं चयन समिति सदस्य के रूप में सक्रिय भूमिका निभाई। इन दायित्वों के माध्यम से विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्तर की नीतियों, नवाचारों तथा श्रेष्ठ शैक्षणिक परम्पराओं से जोड़ने का अवसर प्राप्त हुआ। विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व राष्ट्रीय मंचों पर प्रभावी ढंग से हुआ, जिससे संस्थान की पहचान एक प्रगतिशील एवं दूरदर्शी विश्वविद्यालय के रूप में स्थापित हुई।

18. प्रशासनिक एवं संस्थागत सुधार : उत्तरदायी एवं पारदर्शी प्रशासन की स्थापना

विश्वविद्यालय प्रशासन को अधिक प्रभावी, पारदर्शी एवं उत्तरदायी बनाने के उद्देश्य से अनेक संस्थागत सुधार लागू किए गए। विश्वविद्यालय में डी.लिट्. (D.Litt.) उपाधि प्रदान करने की प्रक्रिया प्रारम्भ की गई है, जिससे सामाजिक एवं शैक्षणिक क्षेत्र में कार्यरत प्रतिभाओं को प्रोत्साहित किया जा सके।

शैक्षणिक एवं प्रशासनिक कार्यों के डिजिटलीकरण की दिशा में Learning Management System (LMS) लागू करने की तैयारी प्रारम्भ की गई है। राज्य स्तर पर समान एवं पारदर्शी प्रवेश व्यवस्था विकसित करने के उद्देश्य से Rajasthan Common Admission Services (RCAS) का प्रस्ताव तैयार कर राज्य सरकार को प्रेषित किया गया है। यह शिक्षा के क्षेत्र में अभिनव पहल होगी।

आधारभूत संरचना एवं तकनीकी सेवाओं को सुदृढ़ करने हेतु दो अभियंताओं की प्रतिनियुक्ति सुनिश्चित की गई। भविष्य की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए शिक्षक एवं

कर्मचारी भर्ती की कार्ययोजना तैयार की गई। विश्वविद्यालय परिसर में स्वास्थ्य परीक्षण शिविर, रक्तदान शिविर तथा चिकित्सकों एवं पैरामेडिकल कर्मियों के सम्मान जैसे सामाजिक उत्तरदायित्व कार्यक्रमों का सफल आयोजन भी किया गया। विद्यार्थियों को परीक्षा से तनाव मुक्त करने हेतु मनोचिकित्सक की सेवाएँ सुलभ कराई जा रहीं हैं।

19. वित्तीय अनुशासन एवं संसाधनों का प्रभावी प्रबंधन

वित्तीय अनुशासन किसी भी संस्थान की दीर्घकालिक स्थिरता एवं विकास का आधार होता है। इस सिद्धांत को ध्यान में रखते हुए विश्वविद्यालय ने वित्तीय प्रबंधन को अधिक पारदर्शी, उत्तरदायी एवं मितव्ययी बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं।

अनावश्यक व्यय पर प्रभावी नियंत्रण स्थापित करते हुए आउटसोर्सिंग व्यय में लगभग 25 प्रतिशत की कमी लाई गई है। विश्वविद्यालय द्वारा UGC को लगभग ₹90 लाख के लंबित UGC-MMTTC उपयोगिता प्रमाण-पत्र (Utilization Certificates) समयबद्ध रूप से प्रेषित किए गए, जिससे वित्तीय अनुपालन की दिशा में महत्वपूर्ण प्रगति हुई। खरीद प्रक्रिया को अधिक पारदर्शी एवं प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए Rate Contract System लागू किया गया है।

सरकारी वाहनों के उपयोग में मितव्ययिता सुनिश्चित की गई तथा कुलगुरु द्वारा निजी वाहन उपयोग से प्राप्त राशि को विश्वविद्यालय कोष में जमा करने जैसी अभिनव पहल प्रारम्भ हुई। इन सुधारों से वित्तीय संसाधनों का अधिक विवेकपूर्ण एवं उत्तरदायी उपयोग सुनिश्चित हुआ है।

20. भवन रखरखाव एवं आधारभूत संरचना विस्तार

विश्वविद्यालय ने आधुनिक एवं सुविधासंपन्न परिसर के निर्माण की दिशा में अनेक महत्वपूर्ण रखरखाव एवं मरम्मत कार्य सम्पन्न किए। नागार्जुन भवन, वाल्मीकि भवन, चाणक्य भवन, महाराणा प्रताप भवन, धन्वन्तरी भवन, विश्वकर्मा भवन तथा शिक्षा संकुल सहित अनेक भवनों के मरम्मत एवं उन्नयन कार्यों में उल्लेखनीय प्रगति हुई।

परिसर की सुरक्षा एवं सौन्दर्यीकरण के लिए सीमा दीवार (Boundary Wall), मुख्य प्रवेश द्वार, स्ट्रीट लाइटिंग तथा परिसर विकास के कार्यों को गति प्रदान की गई है। छात्रावासों का विकास, कुलगुरु सचिवालय, चाणक्य भवन आदि के छत की वाटरप्रूफिंग, मोटर गैरेज का निर्माण तथा ट्यूबवेल स्थापना जैसे कार्यों ने विश्वविद्यालय की आधारभूत संरचना को नई मजबूती प्रदान की है। विश्वविद्यालय के लगभग सभी भवनों की मरम्मत एवं रखरखाव का कार्य जारी है।

21. अतिक्रमण मुक्त परिसर की दिशा में प्रभावी पहल

विश्वविद्यालय ने भूमि एवं परिसंपत्तियों की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए अतिक्रमण हटाने की व्यापक कार्यवाही प्रारम्भ की है। रेलवे से संबंधित अतिक्रमण प्रकरण में उपखण्ड अधिकारी (SDM) स्तर पर आवश्यक आदेश प्राप्त किए गए तथा जिला प्रशासन के सहयोग से विश्वविद्यालय की भूमि का सीमांकन कराया गया।

कालबेलिया बस्ती सहित अन्य अनधिकृत कब्जों को हटाने की प्रक्रिया प्रारम्भ करने हेतु प्रयास जारी है। विश्वविद्यालय का उद्देश्य अपनी समस्त परिसंपत्तियों की सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए भविष्य के विकास कार्यों के लिए पर्याप्त भूमि उपलब्ध कराना है।

22. आगामी कार्ययोजना : उत्कृष्टता की ओर अग्रसर विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय आगामी वर्षों में राष्ट्रीय एवं वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान को और अधिक सुदृढ़ करने के लिए प्रतिबद्ध है। इस दिशा में राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (NAAC) से उच्च श्रेणी का प्रत्यायन प्राप्त करना सर्वोच्च प्राथमिकताओं में सम्मिलित है। आगामी वर्षों में Learning Management System पर आधारित पूर्ण डिजिटल विश्वविद्यालय की स्थापना, शिक्षक एवं कर्मचारी भर्ती, शोध एवं नवाचार को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाना, उद्योग आधारित रोजगारोन्मुख पाठ्यक्रमों का विस्तार, Campus Maintenance System लागू करना, वित्तीय अनुशासन को और अधिक सुदृढ़ बनाना, अतिक्रमण मुक्त परिसर का निर्माण, स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार तथा CSR आधारित विकास कार्यों को गति देना विश्वविद्यालय की प्रमुख कार्ययोजनाओं में सम्मिलित है।

विश्वविद्यालय हरित एवं स्मार्ट परिसर की अवधारणा को और अधिक विस्तारित करते हुए पर्यावरण संरक्षण, ऊर्जा दक्षता तथा सतत विकास के राष्ट्रीय मॉडल के रूप में स्वयं को स्थापित करने के लिए निरंतर प्रयासरत रहेगा।

23. परिवर्तन, उत्कृष्टता और उत्तरदायित्व की एक वर्ष की यात्रा

दिनांक 23 जुलाई 2025 से 22 जुलाई 2026 तक की अवधि महार्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय के इतिहास में परिवर्तन, नवाचार एवं संस्थागत पुनर्जागरण की अवधि के रूप में स्मरणीय रहेगी। यह परिवर्तन, उत्कृष्टता एवं उत्तरदायित्व पूर्णता की ओर अग्रसर होने की यात्रा थी। इस अवधि में विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के प्रभावी क्रियान्वयन, शोध एवं नवाचार, डिजिटल प्रशासन, परीक्षा सुधार, विद्यार्थी कल्याण, उद्योग–शिक्षा समन्वय, पर्यावरण

संरक्षण, अधोसंरचना विकास, वित्तीय अनुशासन तथा भारतीय ज्ञान परम्परा के पुनर्स्थापन जैसे क्षेत्रों में उल्लेखनीय उपलब्धियाँ अर्जित की हैं।

इन प्रयासों ने विश्वविद्यालय को केवल प्रशासनिक दृष्टि से अधिक सक्षम नहीं बनाया, बल्कि उसे विद्यार्थी-केंद्रित, अनुसंधान-प्रधान, तकनीक-सक्षम, भारतीय ज्ञान परम्परा से अनुप्राणित तथा सुशासन आधारित आधुनिक विश्वविद्यालय के रूप में नई पहचान प्रदान की है।

विश्वविद्यालय परिवार पूर्ण विश्वास के साथ यह संकल्प दोहराता है कि माननीय कुलाधिपति महोदय के मार्गदर्शन, राज्य सरकार के सहयोग तथा समस्त शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों, शोधार्थियों, पूर्व विद्यार्थियों एवं समाज के सहयोग से महार्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय उत्कृष्टता के सर्वोच्च मानकों तक पहुँचाने हेतु निरंतर कार्य करता रहेगा।

मैं माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति महोदय के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ, जिनके प्रेरणादायी मार्गदर्शन एवं संरक्षण से विश्वविद्यालय को निरंतर नई दिशा प्राप्त हुई। राज्य सरकार, उच्च शिक्षा विभाग, विश्वविद्यालय के समस्त शिक्षकों, अधिकारियों, कर्मचारियों, विद्यार्थियों, शोधार्थियों, पूर्व विद्यार्थियों तथा समाज के सभी हितधारकों के सहयोग के बिना यह परिवर्तन संभव नहीं था।

इसी सामूहिक प्रतिबद्धता के साथ विश्वविद्यालय भविष्य में भी उत्कृष्टता, नवाचार, भारतीयता एवं राष्ट्र निर्माण के अपने दायित्व का निर्वहन पूरी निष्ठा एवं समर्पण के साथ करता रहेगा।

(प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल)
कुलगुरु
महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर

चाणक्य भवन
प्रशासनिक एवं वित्त अनुभाग